Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI: 10.21474/IJAR01/23058
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23058

CONFERENCE PAPER

जब मन बोलने लगे: मूक-बधिर बच्चों में संगीत और कला की भूमिका

Ranjana jangid
Research Scholar, JNVU Jodhpur

Manuscript Info

Manuscript History
Received: xxxxxxxxxxxxxxx
Final Accepted: xxxxxxxxxxxx
Published: xxxxxxxxxxxxxxx

Key words:-
मूक-बधिर कला और संगीत अभिव्यक्ति
डिजिटल अवसर मानसिक विकास

Abstract

मूक-बधिर बच्चों के जीवन में कला और संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि यह उनके अभिव्यक्ति और संचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गए हैं। इन बच्चों के लिए शब्दों का प्रयोग सीमित होता है, लेकिन उनके मन में भावनाएँ और विचार अत्यंत गहन होते हैं। कला जैसे चित्रकला, मूर्तिकला और अन्य रचनात्मक गतिविधियाँ उन्हें अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर प्रदान करती हैं। रंग, आकृति और रेखाओं के माध्यम से बच्चे अपनी खुशी, दुख, उत्साह और तनाव जैसी जटिल भावनाओं को प्रकट करते हैं। इससे उनकी मानसिक स्थिति संतुलित होती है और आंतरिक संतोष की अनुभूति होती है। संगीत भी मूक-बधिर बच्चों के लिए अत्यंत प्रभावशाली है। वे वाइब्रेशन और लय के माध्यम से संगीत को महसूस करते हैं और ताल-बोध, संतुलन और शारीरिक समन्वय में सुधार करते हैं। नृत्य और साइन लैंग्वेज सॉन्ग्स के माध्यम से वे अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं। कला और संगीत चिकित्सीय दृष्टि से भी लाभकारी हैं। यह तनाव कम करता है, मोटर कौशल का विकास करता है और एकाग्रता बढ़ाता है। समूह गतिविधियों के माध्यम से सामाजिक समावेशन और टीम वर्क की भावना भी विकसित होती है। आधुनिक युग में डिजिटल तकनीक ने मूक-बधिर बच्चों के लिए करियर और व्यावसायिक अवसरों को और अधिक सुलभ बना दिया है। ग्राफिक डिजाइनिंग, एनिमेशन, डिजिटल आर्ट, प्रोग्रामिंग और कोडिंग जैसे क्षेत्र उनकी दृश्य-संवेदनशीलता और तार्किक क्षमता का सही उपयोग करने में सहायक हैं। बाहरी शोर से कम प्रभावित होने के कारण ये बच्चे अधिक उत्पादक और केंद्रित रहते हैं। अतः कला, संगीत और डिजिटल माध्यम मूक-बधिर बच्चों के लिए न केवल अभिव्यक्ति का मार्ग

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

Corresponding Author:- Ranjana

हैं, बल्कि शिक्षा, आत्मविश्वास और व्यावसायिक क्षमता का भी सशक्त स्रोत हैं। इन माध्यमों का संरक्षण और प्रयोग उन्हें पूर्ण जीवन और सामाजिक सहभागिता की ओर अग्रसर करता है।

Introduction:-

जब बोलने की क्षमता साथ न दे, तब भी मन अपने भाव व्यक्त करने का रास्ता ढूंढ ही लेता है। मूक-बधिर बच्चों के जीवन में यह बात साफ दिखाई देती है। वे भले ही शब्दों और ध्वनियों का सहारा न ले सकें, लेकिन उनके भीतर विचारों और भावनाओं की एक समृद्ध दुनिया होती है। ऐसे में कला और संगीत उनके लिए अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम बन जाते हैं। कला और संगीत उनके लिए केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज से जुड़ने का जरिया हैं। इनके माध्यम से वे अपने भाव प्रकट करते हैं, दुनिया को समझते हैं और दूसरों के साथ संबंध स्थापित करते हैं।

कला का महत्व:-

कला एक ऐसी सार्वभौमिक भाषा है, जो शब्दों और ध्वनियों की सीमाओं से परे जाकर भावनाओं, विचारों और अनुभवों को व्यक्त करने की क्षमता रखती है। विशेष रूप से मूक-बधिर बच्चों के लिए कला का महत्व अत्यंत अधिक हो जाता है, क्योंकि यह उनके लिए संवाद का एक प्रभावी और सहज माध्यम बन जाती है। वे भले ही बोल या सुन न सकें, लेकिन उनके भीतर भी संवेदनाओं और कल्पनाओं का एक समृद्ध संसार होता है, जिसे अभिव्यक्त करने के लिए कला उन्हें एक स्वतंत्र मंच प्रदान करती है। मूक-बधिर बच्चों के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपनी भावनाओं को दूसरों तक पहुँचाने की होती है।

संवाद की इस कमी के कारण उनके भीतर कई बार तनाव, निराशा या कुंठा उत्पन्न हो सकती है। ऐसे में कला उनके लिए एक चिकित्सीय साधन के रूप में कार्य करती है। चित्रकला, मूर्तिकला, हस्तकला जैसी रचनात्मक गतिविधियाँ उन्हें अपने मन के विचारों और भावनाओं को बाहर लाने का अवसर देती हैं। जब वे रंगों, रेखाओं और आकृतियों के माध्यम से अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करते हैं, तो उनके भीतर का दबाव कम होता है और उन्हें मानसिक शांति का अनुभव होता है।

कला केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं, बल्कि आत्मविकास का साधन भी है। जब बच्चे अपनी रचनाएँ बनाते हैं और उन्हें सराहना मिलती है, तो उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। इससे उनमें आत्मसम्मान की भावना विकसित होती है और वे स्वयं को अधिक सक्षम और सृजनशील मानने लगते हैं। यह आत्मविश्वास उनके समग्र व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अतिरिक्त, कला उन भावनाओं को भी व्यक्त करने में सहायक होती है,

जिन्हें शब्दों या संकेतों के माध्यम से समझाना कठिन होता है। उदाहरण के लिए, रंगों का चयन बच्चे की मनःस्थिति को दर्शाता है। गहरे और तीव्र रंग उनके भीतर के तनाव, संघर्ष या उदासी को प्रकट कर सकते हैं,

जबकि हल्के और कोमल रंग शांति, खुशी और सकारात्मक भावनाओं का संकेत देते हैं। इस प्रकार कला उनके आंतरिक भावों को बिना शब्दों के ही स्पष्ट कर देती है।

कला के माध्यम से मूक-बधिर बच्चों की कल्पनाशक्ति और रचनात्मकता भी विकसित होती है। वे नए विचारों को जन्म देते हैं और उन्हें विभिन्न रूपों में प्रस्तुत करना सीखते हैं। इससे उनकी सोचने और समझने की क्षमता का विस्तार होता है। साथ ही, यह उन्हें समस्याओं को नए दृष्टिकोण से देखने और उनका समाधान खोजने में भी मदद करता है। अंततः, कला मूक-बधिर बच्चों के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह न केवल उन्हें अपनी भावनाओं

को व्यक्त करने का अवसर देती है, बल्कि उनके मानसिक संतुलन, आत्मविश्वास और रचनात्मकता को भी बढ़ाती है। इसलिए आवश्यक है कि ऐसे बच्चों को कला के विभिन्न रूपों से जोड़ने के अधिक से अधिक अवसर प्रदान किए जाएँ, ताकि वे अपने भीतर छिपी प्रतिभा को पहचान सकें और समाज में अपनी एक अलग पहचान बना सकें।

संगीत का अनुभव:-

आम तौर पर यह माना जाता है कि जो व्यक्ति सुन नहीं सकता, वह संगीत का आनंद नहीं ले सकता, लेकिन यह सोच पूरी तरह सही नहीं है। मूक-बधिर बच्चे संगीत को कानों से नहीं, बल्कि कंपन और लय के माध्यम से अनुभव करते हैं। उनके लिए संगीत सुनने की बजाय महसूस करने की प्रक्रिया बन जाता है।

जब ताल वाद्य यंत्र बजते हैं, तो उनसे उत्पन्न कंपन जमीन और वातावरण के जरिए उनके शरीर तक पहुँचते हैं। वे इन कंपन को महसूस करके लय और ताल को समझने लगते हैं। इस तरह वे संगीत के मूल तत्वों से जुड़ पाते हैं, भले ही वे ध्वनि को सीधे न सुन सकें। नृत्य भी उनके लिए संगीत को समझने का एक प्रभावी माध्यम बनता है। वे फर्श से आने वाले कंपन के अनुसार अपने शरीर की गति को नियंत्रित करते हैं। इससे न केवल उन्हें संगीत की लय का अनुभव होता है, बल्कि उनके शरीर का संतुलन और समन्वय भी बेहतर होता है।

वर्तमान समय में संकेत भाषा के माध्यम से गीत प्रस्तुत करने की परंपरा भी तेजी से लोकप्रिय हो रही है। इसमें हाथों के इशारों, शरीर की मुद्रा और चेहरे के भावों के जरिए गीत के अर्थ और भावनाओं को व्यक्त किया जाता है। इस प्रक्रिया से संगीत केवल सुनने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि एक दृश्य रूप ले लेता है, जिसे मूक-बधिर बच्चे आसानी से समझ और महसूस कर सकते हैं।

समग्र विकास में भूमिका:-

कला और संगीत का प्रभाव केवल भावों की अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि ये बच्चों के मानसिक, शारीरिक और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। रचनात्मक गतिविधियों में भाग लेने से बच्चों का तनाव कम होता है और उनके भीतर की नकारात्मक भावनाएँ सकारात्मक रूप ले लेती हैं। इससे उन्हें

मानसिक शांति और संतुलन प्राप्त होता है। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चों की मोटर स्किल्स का भी विकास होता है। जैसे ब्रश पकड़ना, रंगों का मिश्रण करना या वाद्य यंत्र बजाना—ये सभी कार्य हाथों की पकड़, नियंत्रण और समन्वय को बेहतर बनाते हैं। इसके अलावा,

नियमित अभ्यास से उनकी एकाग्रता और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता भी बढ़ती है, जो उनके सीखने की प्रक्रिया में सहायक होती है। सामूहिक गतिविधियाँ, जैसे समूह में पेंटिंग करना या नृत्य करना, बच्चों को सहयोग और टीम वर्क का महत्व सिखाती हैं। इससे वे दूसरों के साथ मिलकर काम करना सीखते हैं और सामाजिक रूप से अधिक सहज बनते हैं। परिणामस्वरूप, वे समाज में बेहतर तरीके से घुल-मिल पाते हैं और आत्मविश्वास के साथ अपनी भागीदारी निभाते हैं।

प्रेरणा और अवसर:-

इतिहास और वर्तमान समय में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं, जहाँ लोगों ने शारीरिक सीमाओं के बावजूद कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। ये उदाहरण मूक-बधिर बच्चों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनते हैं और उन्हें यह विश्वास दिलाते हैं कि उचित मार्गदर्शन, संसाधन और अवसर मिलने पर वे भी अपने सपनों को साकार कर सकते हैं।

आज के आधुनिक युग में डिजिटल तकनीक ने उनके लिए संभावनाओं के नए द्वार खोल दिए हैं। उनकी मजबूत दृश्य समझ और सूक्ष्म निरीक्षण क्षमता उन्हें ग्राफिक डिजाइन, एनीमेशन और डिजिटल आर्ट जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने में मदद करती है। वे चित्रों, रंगों और प्रतीकों के माध्यम से अपनी रचनात्मकता को प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सकते हैं।

इसके साथ ही, तकनीकी क्षेत्रों जैसे कोडिंग और प्रोग्रामिंग में भी वे अपनी विशेष क्षमताओं का उपयोग कर सकते हैं। इन क्षेत्रों में तार्किक सोच, पैटर्न पहचान और गहन एकाग्रता की आवश्यकता होती है, जो मूक-बधिर बच्चों में अक्सर मजबूत होती है। इस प्रकार, आधुनिक तकनीक और रचनात्मक क्षेत्र मिलकर उन्हें आत्मनिर्भर बनने और अपने भविष्य को सशक्त बनाने के व्यापक अवसर प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष:-

कला और संगीत मूक-बधिर बच्चों के जीवन को अर्थपूर्ण बनाते हैं। ये उनके मौन को आवाज देते हैं और उन्हें आत्मविश्वासी व सृजनशील बनाते हैं। इसलिए जरूरी है कि समाज उन्हें केवल सहानुभूति न दे, बल्कि ऐसे अवसर उपलब्ध कराए, जहाँ वे अपनी प्रतिभा को निखार सकें और अपनी पहचान बना सकें।

संदर्भ:-

1. Darrow, Alice-Ann. "The Role of Music in Deaf Culture: Deaf Students' Perception of Emotion in Music." Journal of Music Therapy, vol. 43, no. 1, Feb. 2006, pp. 2–15. DOI:10.1093/jmt/43.1.2.
2. https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S1871187121000547?via%3Dihub
3. **बंगा, प्रोफेसर रामपाल। "बच्चों के विकास में संगीत की भूमिका।"** RESEARCH REVIEW: International Journal of Multidisciplinary, **विशेषांक, अक्टूबर** 2018, ISSN 2455-3085 **(ऑनलाइन)**, www.rrjournals.com